आर्थिक संवृद्धि की संकल्पना
(CONCEPT OF ECONOMIC GROWTH)

आर्थिक संवृद्धि को हम एक ऐसी वृद्धि के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जो अत्यन्त नीचे जीवन स्तर में फंसी हुई किसी अल्पविकसित अर्थव्यवस्था को अल्पावधि में ही ऊंचे जीवन स्तर पर पहुँचा सके। जो देश पहले से ही विकसित हैं उनमें इसका अर्थ होगा विद्यमान संवृद्धि दरों को बनाए रखना। **यदि ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो तेज आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ औद्योगीकरण की प्रक्रिया भी जुड़ी हुई है। परन्तु सही रूप में देखा जाए तो आर्थिक क्रियाओं का अधिकाधिक वाणिज्यीकरण ही आर्थिक संवृद्धि का सूचक है।** यद्यपि आर्थिक संवृद्धि की यह संकल्पना सही है, फिर भी यह बिल्कुल सुनिश्चित संकल्पना नहीं है और न ही इसका माप सम्भव है। इस सबके बावजूद हम औद्योगिक संरचना में परिवर्तन को आर्थिक संवृद्धि का एक सूचक मान सकते हैं और आर्थिक संवृद्धि को मापने वाले अन्य मापदण्डों के साथ-साथ इस पर भी विचार कर सकते हैं।

आर्थिक संवृद्धि अर्थात् सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि— कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार आर्थिक संवृद्धि एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी अर्थव्यवस्था का सकल घरेलू उत्पाद लगातार दीर्घकाल तक बढ़ता रहता है।[2] इस सन्दर्भ में सकल राष्ट्रीय उत्पाद (gross national product) और सकल घरेलू उत्पाद (gross domestic product) में अन्तर का ध्यान रखना जरूरी है। ऐसा हो सकता है कि किसी देश के नागरिक अन्य देशों में भारी निवेश करें। इससे सकल राष्ट्रीय उत्पाद तो बढ़ जाएगा परन्तु अर्थव्यवस्था पर उसका कोई प्रभाव नहीं होगा। इसलिए सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की बात करना अधिक तर्कसंगत है। एक और बात जिसकी इस सन्दर्भ में चर्चा करनी आवश्यक है, वह यह है कि सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि लगातार काफी लम्बे समय तक होती रहनी चाहिए। केवल कुछ समय के लिए वृद्धि (जैसे व्यापार-चक्र के समृद्धि काल में होती है) संवृद्धि नहीं कहलाएगी।

आर्थिक संवृद्धि को उपर्युक्त रूप से परिभाषित करना सही नहीं है। इसका कारण यह है कि यदि जनसंख्या में वृद्धि सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की तुलना में अधिक होती है तो प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में गिरावट होगी। निश्चय ही इसे हम आर्थिक संवृद्धि नहीं कहेंगे। इसलिए कुजनेत्स का मत है कि आर्थिक संवृद्धि की अवस्था में बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ-साथ प्रति व्यक्ति उत्पादन (या आय) में भी वृद्धि होनी चाहिए।[3]

आर्थिक संवृद्धि अर्थात् प्रति व्यक्ति उत्पाद में वृद्धि— बहुत से अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक संवृद्धि को प्रति व्यक्ति उत्पाद में वृद्धि के रूप में परिभाषित किया है। परन्तु आर्थिक गतिविधि एक जटिल प्रक्रिया है और उसे केवल प्रति व्यक्ति उत्पाद तक सीमित करना उचित नहीं है। आर्थिक संवृद्धि के दौरान बहुत से परिवर्तन होते रहते हैं। इन परिवर्तनों की दिशायें काफी अलग-अलग हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि सकल राष्ट्रीय उत्पाद तो बढ़ रहा हो परन्तु प्रति व्यक्ति उत्पाद में कमी हो रही हो या फिर प्रति श्रमिक उत्पादकता तो बढ़ रही हो परन्तु प्रति व्यक्ति उपभोग कम हो रहा हो। इसलिए आर्थिक संवृद्धि के सूचक के रूप में किसी एक चर (variable) राशि का चुनाव करते समय अत्यधिक सावधानी बरतनी आवश्यक है।

यदि उद्देश्य लोगों के जीवन-स्तर में हुए परिवर्तनों का अनुमान लगाना हो तो उपभोग स्तर में वृद्धि एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सूचक होगा। परन्तु इसे आर्थिक संवृद्धि का सर्वोत्तम सूचक इसलिए नहीं माना जा सकता क्योंकि विकास प्रक्रिया के दौरान बहुत से अल्पविकसित देश जानबूझकर उपभोग स्तर को नियंत्रित करते हैं ताकि निवेश प्रक्रिया को तेज किया जा सके। वस्तुतः निवेश प्रक्रिया को तेज करके और पूंजी निर्माण में वृद्धि करके ही आर्थिक संवृद्धि को बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार के प्रयासों से निवेश में वृद्धि होगी, उत्पादन क्षमता का विस्तार होगा और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी, लेकिन उपभोग में कोई सुधार नहीं होगा। निश्चय ही हम इस प्रकार की स्थिति को आर्थिक संवृद्धि कहेंगे।

कुछ अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक संवृद्धि के विचार को संपत्ति और आय के न्यायपूर्ण वितरण से जोड़ने की कोशिश की है। उनके अनुसार यद्यपि प्रति व्यक्ति उत्पाद में वृद्धि आर्थिक संवृद्धि का महत्त्वपूर्ण सूचक है तथापि केवल उस पर ही निर्भर रहना उचित नहीं है जब तक कि राष्ट्रीय आय और संपत्ति की विद्यमान असमानताओं को कम नहीं किया जाता, अधिक न्यायपूर्ण

Scanned with CamScanner

वितरण नहीं होता। ऐसा हो सकता है कि सकल राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि होने से प्रति व्यक्ति आय स्तर में भी वृद्धि हो परन्तु आय व संपत्ति की असमानताएं बढ़ जाएं। आधुनिक अर्थशास्त्री निश्चय ही इस स्थिति को 'आर्थिक संवृद्धि' का नाम देंगे हालाँकि इसे आर्थिक विकास नहीं कहा जाएगा।

आजकल अधिकतर अर्थशास्त्रियों का मानना यह है कि **आर्थिक संवृद्धि को मापने का सर्वोत्तम तरीका प्रति व्यक्ति उत्पाद में वृद्धि को मापना है।** इसलिए भारत की आर्थिक संवृद्धि से संबंधित समस्याओं पर विचार करते समय हमने इस पुस्तक में प्रति व्यक्ति उत्पाद को यथोचित महत्व दिया है। परन्तु जैसा कि हम समय-समय पर कहेंगे, संरचनात्मक परिवर्तन भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं वस्तुतः कुछ स्थितियों में तो संरचनात्मक परिवर्तन अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। जैसा कि चार्ल्स बीतलहाइम ने कहा है "आर्थिक संवृद्धि की चर्चा करते समय उद्देश्य केवल मात्रात्मक परिवर्तन (अधिक उत्पादन) नहीं होना चाहिए बल्कि गुणात्मक परिवर्तन (अधिक श्रमिक उत्पादकता) पर भी ध्यान देना चाहिए। केवल इस प्रकार के गुणात्मक परिवर्तन द्वारा ही अर्थव्यवस्था उच्च (विकसित) स्तर पर पहुंच सकती है।"[4]

Scanned with CamScanner